

# अनुसंधान

डॉ० संदीप कुमार पाण्डेय  
डॉ० सुचित्रा शर्मा



# अनुसंधान

संपादक

डॉ० संदीप कुमार पाण्डेय

सह-संपादक

डॉ० सुचित्रा शर्मा



समता प्रकाशन

कानपुर (देहात)-209303

### अस्वीकरण

समता प्रकाशन, कानपुर द्वारा प्रकाशित लेखों/शोध पत्रों में व्यक्त विचार योगदानकर्ताओं के अपने हैं। वे आवश्यक रूप से संपादक/प्रकाशक के विचारों को प्रतिबिंबित नहीं करते हैं। संपादक/प्रकाशक इन लेखों/शोध पत्रों की सामग्री/पाठ से उत्पन्न किसी भी दायित्व के लिए किसी भी तरह से जिम्मेदार नहीं हैं।

ISBN 978-93-93403-61-2

प्रथम संस्करण, 30 जून, 2025

पुस्तक : अनुसंधान

संपादक : डॉ० संदीप कुमार पाण्डेय

सह-संपादक : डॉ० सुचित्रा शर्मा

प्रकाशक : समता प्रकाशन

बजरंगनगर, रूरा- कानपुर (देहात) 209303

Mob. : 9450139012, 9936565601

ई-मेल : samataprakashanrura@gmail.com

कॉपीराइट © : डॉ. संदीप कुमार पाण्डेय

मूल्य : 500/-

शब्द-सज्जा : रुद्र ग्राफिक्स, हनुमन्त विहार, नौबस्ता, कानपुर-21

आवरण : गौरव शुक्ल, कानपुर

मुद्रक : सार्थक प्रेस, कानपुर

## अनुक्रम

१.	संवेगात्मक बुद्धि डॉ० मयुर वासुरभाई भम्मर	11
२.	भारत में नगरीय पर्यावरण पर नगरीकरण का प्रभाव डॉ० श्यामा सांडील	23
३.	भक्ति काल के कवियों का राष्ट्र निर्माण में योगदान डॉ० प्रियंका	30
४.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और उच्च शिक्षा में शोध की भूमिका डॉ० नम्रता जैन	41
५.	शोध लेख, आलेख, निबंध और शोध प्रबंध में अंतर डॉ० कल्पना जैन	48
6.	Depiction Of Women Through Lens Of Literature Dr. Neetu Mahajan	56
7.	Role of Indigenous Knowledge Systems in Contemporary Research Nishtha Pandey	62
8.	Educational System In India Shilpa Hippargi	73
9.	ICT impact on 21st-century Education Learning and Assessment Dr. Meenakshi Kujur	80
10.	Research Methodology in Interdisciplinary Studies Dr. Ratnesh Kumar Jain	88
11.	The Influence of Artificial Intelligence on Societal Structures Dr. Ashok Kumar	96
१२.	अनुसंधान में विश्वसनीयता एवं वैधता डॉ० राजेश गौड़	105

१३.	आलोचना और निबन्ध के सूत्रों के समन्वयकर्ता—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल अतुल मिश्र	114
१४.	छायावादी युग में गाँधीवाद का प्रभाव डॉ० मोहित मिश्रा	120
१५.	अनुसूचित जाति की महिलाओं पर महिला सशक्तिकरण का प्रभाव डॉ० श्रद्धा सुमन	129
१६.	शैक्षिक अनुसंधान : अर्थ, उद्देश्य एवं प्रक्रिया डॉ० रीता सिंह	135
१७.	पाठ्यक्रम मूल्यांकन डॉ० भुपेन्द्र कौर	146
18.	The Transformative Role of Virtual Laboratories in Science Education: Aligning with India's National Education Policy 2020 Mrs. Dipti CS Bisht	153
१९.	भारत में वृद्धजनों की समस्याएँ : कारण एवं निवारण डॉ० पूजा तिवारी	164
२०.	साहित्य की समीक्षा से शोध तक : एक बौद्धिक यात्रा डॉ० सुचित्रा शर्मा, प्रो० (डॉ०) अमरनाथ शर्मा	167

## पाठ्यक्रम मूल्यांकन

डॉ० भुपेन्द्र कौर

सहायक प्राध्यापक—शिक्षाशास्त्र विभाग

स्कूल ऑफ एजुकेशन एंड ह्यूमैनिटीज आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद (उ.प्र.)

पाठ्यक्रम मूल्यांकन में 'निर्णय' एक महत्त्वपूर्ण शब्द है। क्या, कैसे तथा अन्त परिणाम को दृष्टि में रखते हुए जब भी मूल्यांकन करना हो तो निर्णय लेना पड़ता है। पाठ्यक्रम मूल्यांकन में क्या, कैसे और क्यों पर विचार करने से पूर्व एक बात स्पष्ट कर लेनी चाहिए। यदि पाठ्यक्रम मूल्यांकन की प्रक्रिया को समझना है तो यह आवश्यक है कि मूल्यांकित वस्तु और निर्णय जो रूप धारण करेगा, उसके घनिष्ठ सम्बन्धों को समझ लिया जाये।

उदाहरणार्थ, एक कलाकृति का मूल्यांकन करने में जो निर्णय लिये जाते हैं वे उन निर्णयों से भिन्न होते हैं जो एक क्रिकेटर के खिलाड़ी का चयन करने के सम्बन्ध में लिये जायेंगे। भिन्न परिस्थितियों में भिन्न प्रकार के निर्णय लेने पड़ते हैं। यदि इस तथ्य को उपेक्षित कर दिया जाये तो सिवाय भ्रम के और कुछ हाथ नहीं लगेगा। दुर्भाग्यवश, पाठ्यक्रम मूल्यांकन का क्षेत्र भी इस प्रकार के भ्रम से अछूता नहीं है। ऐसा इस कारण है कि पाठ्यक्रम मूल्यांकन को विभिन्न रूपों में मूल्यांकित किया जाता है, इसका मूल्यांकन विभिन्न प्रारूपों द्वारा किया जाता है।

### वैज्ञानिक पाठ्यक्रम मूल्यांकन

वैज्ञानिक पाठ्यक्रम मूल्यांकन के तरकश में दो महत्त्वपूर्ण तीर हैं—(1) अपने शैक्षिक उद्देश्य को परिभाषित करिये तथा (2) उनकी एक कार्यकारी परिभाषा (जहाँ तक सम्भव हो व्यावहारिक)। इन्हीं पर मापन यन्त्रों, जैसे—'उपलब्धि परीक्षण' तथा मनोवृत्ति मापनियों के निर्माण की योजना आधारित होती है, जिनका आरोपण पाठ्यक्रम मूल्यांकन सम्भव बनाता है। जिस सीमा तक व्यवहार उपलब्ध हो जाता है वही सीमा पाठ्यक्रम की प्रभाविकता का माप मानी जाती है। प्रभाविकता के माप को प्राप्त करने की प्रक्रिया को ही पाठ्यक्रम मूल्यांकन की प्रक्रिया के रूप में मान्यता दी जाती है।

1950 के अन्त और 1960 के प्रारम्भ में जब पाठ्यक्रम मूल्यांकन के महत्व को समझा गया तभी ब्लूम (Bloom) ने शैक्षिक उद्देश्यों की संज्ञानात्मक टेक्सोनोमी प्रस्तुत की और शीघ्र ही संवेगात्मक उद्देश्य प्रस्तुत करने की तैयारी की। उस समय जो पाठ्यक्रम मूल्यांकन प्रारूप विकसित हुआ वह सैद्धान्तिक रूप में बहुत सरल था (उद्देश्यों को परिभाषित कीजिए तथा उसकी उपलब्धि को मापिये)। इसके आरोपण की विस्तृत वकालत हुई, पर यह सरलता से बहुत दूर सिद्ध हुआ।

जिस समय पाठ्यक्रम प्रभाविकता के मूल्यांकन को महत्व दिया जाना प्रारम्भ हुआ उसी अवधि में पाठ्यक्रम विकास भी वृहद् स्तर पर किया गया। यह ज्ञात करने की चिन्ता कि पाठ्यक्रम इच्छित परिणाम प्रदान करने में प्रभावकारी है या नहीं, पाठ्यक्रम विकास की प्रक्रिया वास्तव में विकास का कार्य कर रही है या नहीं, के समानान्तर था। इसी समय यह ज्ञात करने की जिज्ञासा भी थी कि नया पाठ्यक्रम, पुराने पाठ्यक्रम से उत्तम है या नहीं। अतः एक "Product-process" विवाद प्रारम्भ हुआ तथा एक विस्तृत मूल्यांकन विधि-विधान का प्रारम्भ हुआ जो अन्तिम मूल्यांकन को सतत मूल्यांकन से विलग करता था। इसी अवधि में यह भी स्पष्ट नहीं था कि किन-किन उद्देश्यों को वैध (Valid) माना जाये और किसके द्वारा। प्रारम्भिक अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि अध्यापक और पाठ्यक्रम विकसित करने वाले विभिन्न उद्देश्यों को वैध मानते थे या उद्देश्यों के एक संघ भिन्न प्राथमिकतायें रखते थे। कुछ शिक्षाविद् पाठ्यक्रम मूल्यांकन के वस्तुनिष्ठ उपागम का प्रारम्भ से ही विरोध करते थे।

सार रूप से पाठ्यक्रम मूल्यांकन का वैज्ञानिक उपागम अपने सरल रूप में प्रयोग नहीं किया जा सकता है। इस विवाद ने अन्य शोध की दशा दर्शायी जिसका उद्देश्य या तो वैज्ञानिक उपागम की सूक्ष्मताओं को विस्तृत व स्पष्ट करना था या यह इंगित करना था कि इसका प्रयोग कहाँ और कैसे किया जा सकता है।

पाठ्यक्रम मूल्यांकन के वैज्ञानिक उपागम के विकास में जिसने सबसे अधिक सहायता केवल उद्गम शिक्षा मनोविज्ञान में है। शिक्षा ग्रहण करना ऐच्छिक है अतः उसकी प्रभाविकता को केवल निरीक्षणयुक्त व्यवहार द्वारा ही मापा जा सकता है, शैक्षिक दर्शन और शिक्षा मनोविज्ञान, दोनों एक ही मूल्यांकन प्रक्रिया का प्रयोग करते हैं, यद्यपि उनकी भाषा अलग-अलग है।

निर्णय वैज्ञानिक पाठ्यक्रम मूल्यांकन उपागम का उतना ही अभिन्न अंग है, जितना की अन्य उपागमों का। मापित उद्देश्यों के सम्बन्ध में निर्णय लिया जाता

है तथा इस उपलब्धि को दर्शाने वाले व्यवहार का निर्माण किससे होता है, इस सम्बन्ध में भी निर्णय लेना होता है। निर्णय मूल्यवान है, विशेष रूप से यह जानने के लिये कि पाठ्यक्रम द्वारा प्रत्याशित परिणाम में से कौन-सा शैक्षिक रूप से महत्वपूर्ण परिणाम है। इस प्रकार का निर्णय पाठ्यक्रम को कार्यान्वित करने से पूर्व लेना होता है।

### निर्णय आधारित प्रारूप

वैज्ञानिक पाठ्यक्रम मूल्यांकन उपागम के विकास ने आगे चलकर इस प्रारूप के लिये मार्ग प्रशस्त किया। क्रोनबैक ने एक शोध प्रपत्र में शैक्षिक कार्यक्रमों के सुधार के लिये बुद्धि की आवश्यकता के सम्बन्ध में लिखा। जिससे उनका तात्पर्य पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में निर्णय लेने के लिये वस्तुनिष्ठ बौद्धिक प्रदत्तों को एकत्र करना और उनका मूल्यांकन करना था। स्टफिलबीम ने इस प्रारूप को और स्पष्ट किया। इस मूल्यांकन प्रक्रिया का केन्द्र बिन्दु निर्णायक है तथा जिसका कार्य पाठ्यक्रम को सुधारना है। मूल्यांकन प्रक्रिया का उद्देश्य निर्णायक को पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में प्रासंगिक आनुभाविक सूचनायें प्रदान करना होता है तथा उसका वांछित अन्त बताना अर्थात् क्या उपलब्ध करना है। यह महत्वपूर्ण उद्देश्य मूल्यांकन में सन्निहित शैक्षिक उद्देश्यों से प्राप्त होता है। अर्थात् पाठ्यक्रम, ग्राह्य मूल्यांकन की स्थिति के सम्बन्ध में स्पष्टीकरण प्रदान करना है जिससे मूल्यांकन प्रक्रिया का उतना ही अभिन्न अंग माना जाता है जितना कि प्रदत्त संकलन को। मूल्यांकन प्रक्रिया का अगला चरण, इच्छित उपलब्धियों को प्राप्त करने के लिए वैकल्पिक उपायों के प्रबन्ध को विकसित करना है। इनमें से निर्णायक परिस्थितियों के अनुकूल जो सर्वोत्तम प्रतीत होता है उसका चयन कर लेता है। यह मान्यता रहती है कि चयनित विकल्प, पाठ्यक्रम में इच्छित सुधार लाने में सफल होगा।

कुछ अन्य लोगों ने इस प्रारूप के परिवर्तित प्रारूप प्रस्तुत किये हैं। उदाहरणार्थ, Johnson द्वारा प्रस्तुत प्रारूप "Yes-No" निर्णय बिन्दु के नाम से जाना जाता है। इसका प्रारम्भिक बिन्दु इच्छित परिणाम उपलब्धि से होता है और पृष्ठोन्मुख होते हुए "क्या चयनित विकल्प वैध था" पर समाप्त होता है।

### एक वैकल्पिक दिशा

कुछ पाठ्यक्रम विशेषज्ञ, व्यावहारिक उद्देश्यों पर आधारित पाठ्यक्रम मूल्यांकन के वैज्ञानिक उपागम का विरोध करते हैं। इन लोगों का कहना है कि शिक्षा मूल रूप में मानवीय व सामाजिक होती है, वैज्ञानिक नहीं इन लोगों का तर्क है कि ऐसा न करने पर, हम लोगों पर शैक्षिक अनुभव थोपने का कार्य करेंगे

और लोगों को उस अनुभव से वंचित रखेंगे जो उन्हें उनकी स्वायत्तता तथा वैयक्तिकता प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त इन मानवीय पाठ्यक्रम विशेषज्ञों का तर्क है कि महत्वपूर्ण तथ्य पाठ्यक्रम अनुभव का प्रकार है न कि परिणाम।

परन्तु इस विवाद के उपरान्त भी कुछ ऐसे विद्वान हैं जिन्होंने वैकल्पिक प्रारूप प्रदान किये। इनमें से एक प्रारूप स्टेक का है, जो ध्यान आकर्षित करता है इनका महत्वपूर्ण योगदान, मूल्यांकन के अनेक पक्षों को दर्शाता है।

स्टेक के प्रारूप के दो आधार हैं—एक मंशा और दूसरा निरीक्षण तथा तीन प्रदत्तों के ढाँचे जिसमें एक है पूर्वगामी, दूसरा आचरण और तीसरा है परिणाम।

मूल्यांकन यह चाहता है कि प्रदत्तों को निम्न प्रकार संकलित किया जाये—

- (1) पूर्वगामी मंशा— पाठ्यक्रम विकसित करने वाले के मस्तिष्क में विकसित करते समय क्या है?
- (2) वांछित आचरण— जब पाठ्यक्रम आरोपित किया जायेगा तब क्या—क्या प्रत्याशित घटनायें घटित होंगी।
- (3) प्रत्याशित परिणाम— वांछित से पाठ्यक्रम से क्या परिणाम प्राप्त होगा—वह कौन—सी क्षमतायें और मनोवृत्तियाँ विकसित करना चाहता है।
- (4) पूर्वगामी निरीक्षण— नये पाठ्यक्रम के आरोपित करने से पूर्व कक्षा में क्या घटनायें घटित हुई, विशेष रूप से विद्यार्थियों और अध्यापकों के मध्य क्या घटित हुआ।
- (5) निरीक्षित आचरण— नये पाठ्यक्रम के आरोपण के समय घटित वास्तविक घटनायें या क्रियायें जिनमें छात्र लिप्त रहे।
- (6) निरीक्षित परिणाम— पाठ्यक्रम के आरोपण से वास्तव में जो परिणाम उपलब्ध हुए।

स्टेक का कहना है कि इस प्रारूप के आरोपण से जो प्रदत्त एकत्रित होंगे वह केवल शैक्षिक मापन के विशेषज्ञों द्वारा ही नहीं, वरन् समाजशास्त्र तथा राजनीति वैज्ञानिकों और इतिहासकारों द्वारा भी जो निरन्तर मत, पसन्द और मूल्यों को अध्ययन करते रहते हैं, के लिए भी उपयोगी होंगे स्टेक के लिये प्रदत्त संकलन स्वयं में अन्त नहीं था। उनका मत था कि मूल्यांकनकर्ता नैदानिक रूप से पाठ्यक्रम का मूल्यांकन कर लेने के पश्चात् अपना पल्ला नहीं झाड़ लेना चाहिए और दूसरों पर उसका अर्थ मूल्य का निर्णय छोड़ देना चाहिए। यह मूल्यांकनकर्ता के उत्तरदायित्व है कि पाठ्यक्रम आशाओं के अनुरूप सिद्ध हुआ या नहीं।

स्टेक के योगदान ने मूल्यांकन के परिपेक्ष्य को विस्तार प्रदान किया। उन्होंने ऐसा कर मंशा (Intents) और निरीक्षण दोनों को महत्व प्रदान कर दिया

साथ ही अपने मूल्यांकन में निर्णयों को पुनः प्रबलन प्रदान किया। तब भी आपका उपागम सैद्धान्तिक तथा बहुत अधिक मापन उन्मुख था। स्टेक के प्रारम्भिक कार्य के सम्बन्ध में वेस्टबरी ने कहा है।

### नवीन मूल्यांकन

वह उपागम जो पाठ्यक्रम लक्ष्य की प्राप्ति के मात्रात्मक अनुमान पर बल न देकर गुणात्मक पक्ष पर बल देता है और जो अध्यापक-बालक-पाठ्यक्रम में गुणात्मक पक्ष में रुचि रखता है उसे 'नवीन' (New) मूल्यांकन के नाम से जाना जाता है। 'नवीन' मूल्यांकन में ध्यान का केन्द्र, अधिगम क्षेत्र की विभिन्नता और जटिलता पर है जो संस्कृति से किसी भी हाल में कम नहीं है जिसमें कि पाठ्यक्रम सन्निहित है। इसमें मूल्यांकनकर्ता का सम्बन्ध मापन और पूर्वकथन से न होकर विवरण और व्याख्या से होता है। नवीन मूल्यांकनकर्ता 'समग्रता' और पूर्णता की बात 'प्रकाश' चमक तथा चित्रण के माध्यम से स्वीकारात्मक रूप में करता है। मूल्यांकन के नवीन उपागम को नाम से जाना जाता है, जिसका सम्बन्ध व्याख्या से न होकर विवरण से होता है। उसका उद्देश्य अधिगम प्रक्रियाओं और परिणामों के विवरण को प्रदान करना होता है, न कि सफलता की पूर्व निर्धारित कसौटी के सम्बन्ध में। यह उपागम यह भी बताता है कि छात्रों को पाठ्यक्रम कितना सार्थक प्रतीत होता है। इसका सम्बन्ध पाठ्यक्रम को अध्यापकों, लोगो, परामर्शदाताओं, इन्स्पेक्टरों तथा स्थानीय एवं राष्ट्रीय अधिकारियों के दृष्टिकोण से अर्थ प्रदान करने से होता है। उक्त उपागम इस विश्वास पर आधारित है कि सामाजिक प्रत्यय के लिये एक न होकर अनेक वास्तविकतायें हैं।

अपना विवरण देते हुए 'नवीन' मूल्यांकनकर्ताओं ने सांचनात्मक पथ को अपनाया तथा माना कि विचार और अर्थ, घटनाओं तथा तथ्यों से अधिक महत्वपूर्ण है।

'नवीन' मूल्यांकनकर्ताओं का प्रारूप भौतिक विज्ञानों की भाषा और मापन की टेक्नोलॉजी को नकारता है क्योंकि इन लोगो ने अपने प्रारूप को अभी पूर्णरूप से विकसित नहीं किया है न ही उदाहरण के रूप में बहुत अधिक प्रकाशित किया है। ये लोग मूल्यांकन को एक सैद्धान्तिक मुद्दा बनाना चाहते हैं जो अंको के खेल से परे हो। हमें अधिक सन्तुलित दृष्टिकोण, विभिन्न प्रारूपों की अच्छाई और सीमाओं का आंकलन करना होगा तथा यह ज्ञात करना होगा कि उनको सर्वोत्तम रूप से कहाँ आरोपित किया जा सकता है तथा मूल्यांकन को उसकी विभिन्न और जटिलताओं के साथ जानने में हमारी सीमायें क्या हैं?

यदि मूल्यांकन में कोई केन्द्रीय बिन्दु है तो वह प्रकार का न होकर मात्रा का है, वह मापन का है न कि मूल्यांकन का एक अवस्था में निर्णय, प्रायः किसी मानक के सन्दर्भ में गुण की मात्रा के अनुमान के परिणाम पर आधारित होता है, दूसरी अवस्था में यह आन्तरिक महत्व या अनुमानित विशेषता को पहचानने पर आधारित होता है।

पद्धति प्रारूप में मूल्यांकनकर्ता को शिक्षित लोगों से प्रस्तावित पाठ्यक्रम के बारे में सूचनायें प्राप्त हो जाती हैं। अतः कार्यकारी पाठ्यक्रम को प्रभावित करने वाले कारकों का ज्ञान प्राप्त हो जाता है। इस पद्धति में मूल्यांकनकर्ता का ध्यान प्रस्तावित पाठ्यक्रम के परिणाम या शिक्षण और अधिगम की प्रक्रिया पर रहता है।

मूल्यांकन के दूसरे पक्ष की ओर ध्यान आकर्षित कर स्टेक ने महत्वपूर्ण योगदान किया। आपने वांछित पाठ्यक्रम में सन्निहित विशेषताओं और शिक्षा के प्रादुर्भाव के प्रत्ययों के मध्य सम्बन्धों को अपने प्रारूप में स्पष्ट किया है।

विकर्स के सामाजिक निर्णय पर किये गये शोध से यह तथ्य स्पष्ट हो गया कि पाठ्यक्रम मूल्यांकन के एक वृहद भाग, पाठ्यक्रम प्रशंसा को उपेक्षित किया गया है।

पाठ्यक्रम मूल्यांकन के क्षेत्र को विभेदात्मक परस्पर सम्बन्धित निर्णय के रूप में दर्शाने का प्रयास किया गया है। इसके अतिरिक्त हर प्रारूप के प्रवर्तक, उनके प्रारूप का प्रकार और कुछ उदाहरण दिये गये हैं।

निर्णय का प्रत्यय दोनों प्रकार के मूल्यांकन को एक सूत्र में बाधता है। वे कदाचित् एक सिक्के के दो पक्ष के रूप में देखे गये हैं क्योंकि दोनों का लक्ष्य एक ही है।

### गुणात्मक पक्ष

मूल्यांकन की गुणवत्ता बढ़ाना एक मुख्य आवश्यकता है, प्रदत्तों का मूल्यांकन, जिस पर मूल्यांकनकर्ता भरोसा कर सके, किसी पाठ्यक्रम का चलाते रहने या स्थगित करने का निर्णय लेने में सहायता प्रदान करता है। मूल्यांकन प्रक्रिया में गुणवत्ता का आश्वासन प्राप्त करने के लिए मूल्यांकनकर्ता प्रायः निम्नलिखित चरणों का पालन करते हैं—

1. योजना का लक्ष्य इंगित होता है, साथ ही वांछित परिणाम और उसे प्राप्त करने के वैकल्पिक उपाय जिनके द्वारा यह लक्ष्य प्राप्त किया जाये, पहले से इंगित होते हैं।
2. मूल्यांकन के लिए छात्रों का एक न्यादर्श चयन किया जाता है। यह न्यादर्श उस समग्र का जिस पर पाठ्यक्रम आरोपित करना है, का प्रतिनिधि होना चाहिए।

3. न्यादर्श के सदस्यों का मापन, प्रासंगिक विशेषताओं के सम्बन्ध में उनकी स्थिति ज्ञात करने के लिए किया जाता है। उदाहरणार्थ, उनका उपलब्धि स्तर तथा अधिगम निपुणता का ज्ञान प्राप्त करना।
4. पाठ्यक्रम योजना को न्यादर्श पर आजमाया जाता है क्योंकि वैकल्पिक उपायों की जाँच करनी होती है अतः न्यादर्श के हर भाग को अलग-अलग उपचार दिये जाते हैं।
5. विभिन्न वैकल्पिक उपायों के प्रभाव का आंकलन कर लिया जाता है। यह पाठ्यक्रम योजना के क्रियान्वयन के समय ही किया जाता है तथा इसे निर्माणाधीन मूल्यांकन (Formative Evaluation) कहते हैं। उपचार प्रक्रिया के अन्त में भी मूल्यांकन किया जाता है। इसे योगिक मूल्यांकन कहते हैं। दोनों प्रकार का मूल्यांकन प्राप्त करने के लिए, परीक्षणों, प्रश्नावलियों, साक्षात्कारों, व्यवस्थित निरीक्षण तथा अन्य उपयुक्त उपायों का प्रयोग किया जाता है।
6. परिणामों का पुनर्मूल्यांकन किया जाता है और निष्कर्ष निकाले जाते हैं।
7. निष्कर्ष यह बताते हैं कि योजना के समस्त अंगों के साथ क्या किया जाये? पाठ्यक्रम को वर्तमान रूप में ही बनाये रखा जाये, उसमें परिवर्तन किया जाये या उसे विगलित कर दिया जाये।

### संदर्भ

- अस्थाना विपिन (डॉ), अस्थाना श्वेता (डॉ) (2010-11) : मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
- शर्मा ए. आर. (डॉ) (2008) : शिक्षा अनुसंधान, आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ।
- लाल बिहारी रमन (डॉ) (2008) : शैक्षिक मानप एवं मूल्यांकन आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ।

# अनुसंधान

डॉ० संदीप कुमार पाण्डेय  
डॉ० सुचित्रा शर्मा

## सम्पादक के बारे में....



डॉ० संदीप कुमार पाण्डेय का जन्म उत्तर प्रदेश में एक सुभ्रांत एवं सुसंस्कृत ब्राह्मण परिवार में हुआ। आपने कानपुर विश्वविद्यालय से वर्ष 2009 में प्राचीन भारतीय इतिहास विषय में स्नातकोत्तर की उपाधि प्रथम श्रेणी में प्राप्त की और वर्ष 2013 में "जैन पुराणों का सामाजिक-आर्थिक अध्ययन" विषय पर प्रो. बी.एम. त्रिपाठी जी के कुशल मार्गदर्शन में शिक्षा जगत की सर्वोच्च उपाधि प्राप्त किया। आपने 60 से अधिक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में सहभागिता कर उत्कृष्ट शोधपत्रों का वाचन कर चुके हैं, साथ ही आपके 70 से अधिक शोध पत्र/शोध आलेख प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं।

शिक्षा, साहित्य व शोध के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए आप कई राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त कर चुके हैं। अभी तक आपकी 51 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। आप विगत 16 वर्षों से विभिन्न कॉलेजों/विश्वविद्यालयों में सहायक प्राध्यापक, प्रभारी प्राचार्य, विभागाध्यक्ष व विभिन्न प्रशासनिक पदों पर कार्य किया, साथ ही भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर (राज.) में सहायक कुलसचिव (शोध) के पद को भी सुशोभित कर चुके हैं। वर्तमान में आप एस.आई.आई. कॉलेज, उत्तराखण्ड में व्याख्याता के पद पर कार्यरत हैं।



डॉ० सुचित्रा शर्मा, एम.ए. (स्वर्ण पदक) एम.फिल., पी.एच-डी, एम.एस.सी. (मूल्य शिक्षा और आध्यात्म), पी.जी. डिप्लोमा (आध्यात्मिक स्वास्थ्य एवं परामर्श) पिछले 42 वर्षों से अध्यापन के साथ-साथ विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों, सेमिनार और वेबीनार में विषय विशेषज्ञ की भूमिका। दो शोध परियोजनाएं ICSSR और UGC संपन्न। 12 पी.एच-डी संपन्न। 04 पुस्तकें प्रकाशित, 07 पुस्तकों में अध्याय लेखन। 60 से अधिक शोध पत्र राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर और क्षेत्रीय स्तर पर 14 आलेख प्रकाशित। 100 से अधिक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार कार्यशाला और अधिवेशन में शोध पत्र प्रस्तुतीकरण। राष्ट्रीय स्तर पर 18 वेबीनार और तीन कार्यशाला का आयोजन। राष्ट्रीय स्तर पर 07 अवार्ड। अकादमिक गतिविधियों के साथ-साथ मूल्य शिक्षा के द्वारा आध्यात्मिक परामर्श विशेष रूप से थर्ड जेंडर समुदाय पर सक्रिय कार्य व्याख्यान और जागरूकता कार्यक्रम। शासकीय सेवा से सेवानिवृत्त होकर वर्तमान में भारती विश्वविद्यालय दुर्ग में विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में सेवाएं जारी।



समता प्रकाशन

प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

बजरंगनगर, रूरा, कानपुर (देहात)-209303

(उत्तर प्रदेश)

मो० 09450139012, 07007749872

E-mail : samataprakashanrura@gmail.com

ISBN 978-93-93403-61-2



9 789393 403612 >

₹500/-